Ianna Journal of Interdisciplinary Studies, EISSN: 2735-9891

Volume 8, Issue 1, 2026

'राम की शक्तिपूजा' में केन्द्रीय संवेदना 'सीता की मुक्ति'

डॉ दीपक कुमारी,
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
चौधरी बंसी लाल विश्वविद्यालय, भिवानी
kumarideepak1982@gmail.com

शोध सारांश

छायावाद के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि महाप्राण निराला द्वारा 1936 ई. में रचित 'राम की शक्तिपूजा' एक लंबी प्रबंधात्मक कविता है। यह कविता स्वतंत्रता संग्राम के दौर में लिखी गई भारतीयों के लिए सबसे अधिक प्रेरणा का स्रोत रही। उस दौर में स्त्रियों ने भी स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़ कर भागीदारी की, परन्तु स्वंय की स्थिति से उभर नहीं पाई थी। 'राम की शक्तिपूजा' के माध्यम से स्त्रियो को घर की चारदीवारी से बाहर लाने का काम निराला जी ने किया है जिसके बाद उन्होंने समाज में अपनी पहचान कायम की। इस कविता का केन्द्रीय भाव सीता की मुक्ति और सीता के प्रतीक के माध्यम से नारी मुक्ति की कामना की है। निराला गार्हस्थिक प्रेम के कवि हैं उनके सम्पूर्ण साहित्य में गार्हस्थिक प्रेम के प्रति समर्पण के कई उदाहरण दिखते हैं। जैसे पंचवटी प्रसंग में तुलसीदास तथा सरोज-स्मृति के भी कुछ अंश है। शक्तिपूजा की मूल संवेदना इसी कड़ी का अगला चरण है। वे सरोज-स्मृति में पुत्री की मुक्ति करते हैं। 'राम की शक्तिपूजा' में पत्नी की मुक्ति उनकी नारी मुक्ति चेतना का सर्वोच्च चरण है जिस अधर्मी व आसुरी शक्ति का स्त्रियों को सामना करना पड़ता है। राम की शक्तिपूजा में सीता की मुक्ति का केन्द्रीय भाव है। इसका प्रमाण यह है कि सिर्फ कथानक के उद्देश्य के रूप में नहीं बल्कि हर मोड़ पर सीता उपस्थित हैं। यूं प्रतीत होता है कि राम के पास न होते हुए भी राम के शिविर की सभी घटनाओं का संचालन सीता ही कर रही हैं।

यहाँ इस शोधपत्र में हम केन्द्रीय संवेदना पर मुख्य रूप से प्रकाश डालेंगे। 'राम की शक्तिपूजा' में पाठकों की मूल संवेदना सीता के इर्द-गिर्द घूमती है । राम-रावण के इस युद्ध में सभी की संवेदनाएं सीता के लिए व्यथित हैं। चाहे वो राम का हृदय हो या समाज का,सभी पात्र सीता की मुक्ति के लिए तत्पर हैं। हालांकि इस कविता के माध्यम से हमें भारत के स्वतंत्रता संग्राम की चेतना भी मिलती है परन्तु सीता के प्रति कवि की या मानव समाज की मानवीय संवेदनाएं मुख्य रूप से मुखरित हुई हैं। अतः सबसे पहले यह जानना आवष्यक है कि 'मानवीय संवेदना' क्या होती है।

''संवेदना का अर्थ है अनुभूति, ज्ञान, तद्विषयक सूचना देना, सूचित करना, सुख-दुख की अनुभूति या प्रतीति, भावुक, सहृदय प्रकट करना, अनुभव करने योग्य आदि।''[1]

''मानवीय का अर्थ है-मानव संबंधी, इंसानी।''[2]

मानवीय संवेदना अर्थात मानव संबंधी सुख-दुख की अनुभूति करना। मानवीय संवेदना मनुष्य से सम्बन्धित होती है। सुख-दुख मनुष्य जीवन के दो पहलू है। जब मानव जीवन में ऐसे पल आते हैं तो मानवता के नाते दूसरे इंसान उसकी मदद करते हैं। यही मानवीय संवेदना है। हमारा हृदय ऐसे पलों में संवेदनशील हो उठता है और पीड़ित मनुष्य

को हर संभव सहायता देने का प्रयत्न करता है। यही उसका मानववाद है। मानववादी चेतना के फलस्वरूप पहला काम यह हुआ कि मनुष्य-मनुष्य की समता का भाव जागा। धर्म, देश, वर्ण, जाति के आधार पर मनुष्य-मनुष्य में भेद की अभेद्य दीवार को तोड़ने की कोशिश की गयी। कबीर ने इस दिशा में जोरदार पहल की थी।

''मानव एक ओर व्यक्ति है और दूसरी और सामाजिक प्राणी। व्यक्ति और समाज के अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों पर ध्यान न देने के कारण कुछ लोग व्यक्ति स्वातन्त्र्य पर जोर देते हैं तो कुछ लोग सामाजिकता पर। मनुष्य होने का अर्थ स्वतन्त्र होना है, घिसी-पिटी परम्पराओं, रूढ़ियों के विरोध में स्वयं का निर्णय मनुष्य को मनुष्य बनाता है। इसी को कुछ लोग अन्तरात्मा का विवेक कहते हैं।''3

मानववाद एक प्रमुख विचारधारा है जिसके अनुसार मनुष्य ही मनुष्य का प्रतिमान है। इस विचारधारा को मानने वाले मानववादी कहलाये। उनका मानना है कि मनुष्य में जो पाश्विक है और जो दिव्य है, उन दोनों के मध्य में कुछ ऐसा है जो पूर्णतः मानवीय है और उसी को नैतिकता, कला, सौंदर्यबोध तथा अन्य आचार-विचार का प्रतिमान मानना चाहिए।

व्यक्ति में संकीर्णता,स्वार्थपरता,और राष्ट्र हित से मुख मोड लेने की प्रवृति बढती जा रही है। मनुष्य के अशुद्ध विचार नमक के समान होते हैं जो स्वयं अपने जीवन को कडवाहट से भर देते हैं साथ में दूसरों के जीवन को भी खारा बना देते हैं। जीवन में अत्यधिक तनाव इसी प्रवृति का परिणाम है जिससे वैचारिक प्रदूषण जन्म लेता हैं।

'राम की शक्तिपूजा' की केन्द्रीय संवेदना 'सीता की मुक्ति :-

'राम की शक्तिपूजा' कविता की केन्द्रीय संवेदना सीता की मुक्ति है। सीता न सिर्फ इस सम्पूर्ण युद्ध में शक्तिपूजा का उद्देश्य है बल्कि कथा के हर मोड़ पर भी सक्रिय रूप से उपस्थित हैं। कविता की संरचना का सूक्ष्म विश्लेषण ऐसे कई बिन्दुओं की पहचान कराता है। कविता की पहली अठारह पंक्तियों में राम की सेना में पराजय तथा हताशा की मानसिकता है। केवल अंतिम दो पंक्तियों में संकेत है कि हनुमान एकमात्र योद्धा हैं जो पूर्ण चेतना व क्षमता से युक्त हैं। 18वीं पंक्ति सीता पर केन्द्रित है जिसे पढ़कर यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि युद्ध का सम्पूर्ण वर्णन यही दिखाने के लिए हुआ है कि सीता मुक्ति की आशा कितनी धूमिल हो गई है।

''उद्गीरित-वह्नि-भीम-पर्वत-कपि-चतुःप्रहर,
जानकी भीरू-उर-आशाभर रावण-सम्वर।''4

युद्ध प्रसंग के बाद राम की सेना की सभा का प्रसंग है। राम के मन में अंधकार एवं निराशा की अमानिशा है दिशाओं अर्थात सफलता के मार्गों का सारा ज्ञान खो चुका है, चिन्ता व तनाव समुद्र की भांति लगातार गरज रहे हैं और भूधर के समान स्थिर भाव राघवेन्द्र को संशय,विकलता,पराजय बोध ने बुरी तरह झकझोर दिया है। इस घोर निराशा में राम को आशा मिलती है तो अपने जीवन की सबसे सुन्दर स्मृति से और यह स्मृति सीता की ही है।

''ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत,जागी पृथ्वी तनया कुमारिका छवि,अच्युत।ऐसे नयनों का नयनों से गोपन प्रिय संभाषण,पलकों का नवपलकों पर प्रथमोत्थान।''5

सीता मिलन की स्मृति इतनी स्फूर्तिदायक है कि घोर निराशा में पड़े राम कुछ क्षणों के लिए सम्पूर्ण निराशा को छोड़कर विश्वविजय भावना से भर जाते हैं और धनुर्भग को तैयार हो जाते हैं।

''सिहरा तन,क्षण भर भूला मन,लहरा समस्त,
हर धनुर्भग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त,
फूटी स्मिति सीता-ध्यान-लीन राम के अधर,
फिर विश्व विजय-भावना हृदय में आयी भर।''6

किन्तु स्मृतिजन्य आत्मविश्वास मनोवैज्ञानिक राहत भले ही पहुचाये वस्तुगत स्थितियों को पलट नहीं सकता। यही कारण है कि आज के युद्ध में देखी हुई भीमा की मूर्ति का स्मरण होते ही राम शंकाओं से घिर उठते हैं और शंकाग्रस्त होते ही उन्हें सीता की वे आंखे याद आती हैं जो इस उम्मीद में राम की प्रतीक्षा कर रही हैं कि वे उन्हें बचाने आएंगे।

''कितना श्रम हुआ व्यर्थ! आया जब मिलन समय,
तुम खींच रहे हो हस्त जानकी से निर्दय।''7

इसके बाद सीता की केन्द्रीयता कविता के अंतिम हिस्से से स्पष्ट होती है। राम आत्मधिकार के तुरंत बाद न सिर्फ सीता की मुक्ति न होने की हताशा व्यक्त करते हैं बल्कि इसी बिन्दु पर उनके उदार व्यक्तित्व का रूपान्तरण होता है। राम सात्विक व्यक्ति हैं और नैतिकता को अपने स्वार्थ से कहीं उपर रखते हैं किन्तु उनका सम्पूर्ण नैतिक जीवन दाॅंव पर है। सीता की मुक्ति यदि न हो सकी तो सम्पूर्ण नैतिकता,सम्पूर्ण औदात्य व गरिमा राम के लिए निरर्थक हैं। सीता का उद्धार न हो सकने की छटपटाहट इतनी तीव्र है कि राम का एक और मन उठ खड़ा होता है जो न झुकने को तैयार है,न हारने को।

''लख शंकाकुल हो गये अतुल-बल-शेष- शयन,
खिंच गये दृगों में सीता के राममय नयन,
फिर सुना-हँस रहा अट्टहास रावण खलखल,
भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्ता दल।''8

इसके बाद सांय सभा में राम की पराजय भावना को देखते हुए विभीषण एक मित्रोचित प्रयास करते हैं ताकि राम का खोया आत्मविश्वास पुनः लौट सके। विभीषण सीता की याद दिलाकर तथा सीता के संभावित कष्टों का चित्र खींचकर राम को प्रेरित कर रहे हैं।

''जानकी हाय! उद्धार प्रिया का हो न सका,
वह एक और मन रहा राम का जो न थका,
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय।''9

यह आक्रामकता,यह दृढ़ता और यह विजेच्छा किसी भी पराजयपूर्ण स्थिति को पलट सकती है। सीता के प्रति राम का प्रेम एवं प्रतिबद्धता का स्तर इतना ऊँचा है कि अपनी आंख निकाल कर देने को तैयार हैं। प्रेम का यही आदर्श है जिसे कबीर ने सीस उतारै हाथि करि, कहकर और जायसी ने प्रेम पहार कठिन विधि गढ़ा कहकर व्यक्त किया है। राम कहते हैं कि-

''दो नीलकमल हैं शेष अभी यह पुरष्चरण''

Ianna Journal of Interdisciplinary Studies, EISSN: 2735-9891
Volume 8, Issue 1, 2026

पूरा करता हु देकर मातः एक नयन।''10

इससे स्पष्ट होता है सीता के लिए राम अपनी एक आंख को देने को तत्पर हैं यही तत्परता सीता को कविता की संरचना में हर जगह उपस्थित रखती है। नारी मुक्ति निराला का स्थायी भाव है। साहित्य परम्परा में पुत्र वात्सल्य तो खूब दिखता है किन्तु 'सरोज-स्मृति'' में पुत्री के प्रति वात्सल्य दिखाकर उन्होंने रूढ़िवादी पुरूष प्रधान समाज में पुत्री को मुक्त किया है। शक्ति पूजा में सीता मुक्ति से नारी -मुक्ति का संदेश दिया गया है। तुलसी के राम सीता के लिए लड़ते हैं पर सीता से समतामूलक प्रेम नहीं कर पाते। दूसरी और निराला के राम को पत्नी के रूप में नहीं प्रेयसी के रूप में देखते हैं- 'जानकी हाय उद्धार प्रिया का न हो सका। यह अंतर तुलसी और निराला का कम दोनों के युगों को विचार दृष्टियों का अधिक है। इसके बाद भी यह नहीं भूलना चाहिए कि शक्ति पूजा सश्लिष्ट संवेदना की कविता है जिसकी वस्तु संरचना एक साथ कई पक्षों को समेटती है। सीता की मुक्ति इस भाव समुच्चय का केन्द्रीय तत्व है हालांकि उस समय यह कविता राष्ट्रीय आंदोलन,शक्ति की मौलिक कल्पना,पौराणिक राम के मानवीय रूपान्तरण,निराला के आत्म-संघर्ष तथा सत् असत् संघर्ष जैसे बिन्दुओं को भी समानातंर रूप से धारण करती है। राम की शक्तिपूजा में निराला ने जो प्रसंग चुना है वह अपने समय से जुड़ा हुआ है। 1936ई. को भारत में स्वाधीनता संग्राम में निरूत्साहिता का दौर था गाँधी व देश का मन पराजय बोध से भरा था। निराला स्वंय भी सरोज की मृत्यु के बाद गत कर्मों का अपर्ण कर चुके थे व बेहद टूटे हुए थे। ऐसे समय में राम के प्रतीक का चयन बेहद प्रभावशाली था। राम भारतीय अवचेतन में सत् असत् के सार्वकालिक संर्घष में हमेशा सत् के पक्ष खड़े नायक के प्रतिनिधि हैं। निराला ने न सिर्फ राम की कथा को चुना बल्कि कथा में भी उस विशिष्ट प्रसंग को चुना है जहाँ वे टूटन व हताशा के शिकार हैं। ऐसा होते ही देश की टूटन युगीन संदर्भो से मुक्त होकर सार्वकालिक हो उठी और राम के मिथक में निहित सृजनात्मक शक्ति देश के मनोविज्ञान का उद्बोधन करने के लिए प्रासंगिक हो गई।

निराला सिर्फ आवश्यकतानुसार प्रसंग को चुनते नहीं, अपनी कल्पना से उसका विस्तार व व्याख्या भी करते हैं। कोई भी व्यक्ति किसी अन्य काल में ठीक वैसा का वैसा प्रासंगिक नहीं होता बल्कि उसमें कल्पना का हस्तक्षेप जरूरी होता है। निराला ने राम के मिथक में कई परिवर्तन किए जो 1936ई. के भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप थे। उदाहरण के लिए राम शक्ति की साधना के लिए योग प्रक्रिया का प्रयोग करते हैं जो कृतिवास रामायण से भिन्न है। यह आतंरिक शक्ति का संकेत है जो तत्कालीन स्वतंत्रता संग्राम की दृष्टि से अत्यंत प्रासंगिक थी।

कविता के अंत में शक्ति का राम के मुख में लीन होना दिखाया गया है जबकि उन्होंने रावण को शक्ति की गोद में बैठा हुआ दिखाया है। यह इस बात का प्रतीक है कि शक्ति का आंतरिक संबंध नैतिकता के साथ है। हनुमान प्रसंग भी इस कविता में मौलिक रूप से उपस्थित है जो संभवत यह दिखाने के लिए है कि तत्कालीन भारतीय जन के पास इतनी शक्ति थी कि वह अंग्रेजी सत्ता को यू भी हरा सकता था। राम का सीता के प्रति लगाव दिखाया गया है वह नारी- पुरूष के आधुनिक समतामूलक संबंधों का प्रतीक है। इस दृष्टि से जो वाल्मीकि या तुलसी नहीं कर सके,वह निराला ने कर दिखाया है। निराला की यह विशेषता उनके सम्पूर्ण साहित्य में है। 'जुही की कली' उस समय की रचना है जब पहली बार भारतीय समाज में व्यक्तित्व की मांग समाज से टकराने लगी थी। इसलिए 'जुही की कली' कैशोर्य किस्म की अनुभूतियों पर आधारित रचना है। 'तुलसीदास' लिखते समय निराला वर्तमान समय के अंधेरे का

Ianna Journal of Interdisciplinary Studies, EISSN: 2735-9891
Volume 8, Issue 1, 2026

प्रतीकात्मक संकेत 'उर के आसन पर शिरस्रतराण'वाक्य से करते हैं। जब वे 'सरोज-स्मृति' लिखते हैं तो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में व्याप्त छल,कपट व कान्यकुब्जों में प्रचलित दहेज-प्रथा पर चोट करने से नहीं चूकते और देखते ही देखते पुरूष-प्रधान समाज में बेटी को मुक्त कर देते हैं जो 1927ई.के आसपास उभरती हुई नारी चेतना का ही संकेत है। जब वे 'कुकुरमुक्ता' लिखते हैं तो प्रगतिवाद की रूढ़ियों पर करारी चोट करते हैं क्योंकि उस समय के प्रगतिवादी विचारक जीवन के हर पक्ष की व्याख्या वर्ग-संघर्ष के यांत्रिक मुहावरे से करने का प्रयास करते थे। वे छायावाद के दौर में भी 'भिक्षुक' तथा 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी कविताएँ रचते हैं। जो इस तथ्य का संकेत है कि जब तक जनसाधारण को मानवोचित जीवन न मिल जाए तब तक मध्यवर्गीय व्यक्ति की भूख कितनी निरर्थक व हास्यास्पद है।

''विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण, हे पुरूष सिंह तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधना का दृढ़ आराधन से दो उपकार,तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर,
रावण अशुद्व होकर भी यदि कर सका त्रस्त तो निश्चय तुम ही सिद्व करोगे उसे ध्वस्त,
शक्ति की करो मौलिक कल्पना,करो पूजन,छोड़ दो समर जब तक न सिद्वि हो रघुनन्दन।''11

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति में पुरुषोत्तम वही हो सकता है जो अपनी पत्नी के धर्माचरण की रक्षा कर सके। सीता की मुक्ति कथानक का उद्देश्य हैं यह रचना के अंतिम हिस्से में पूर्णतःस्पष्ट होता है। शक्ति पूजा का अंतिम इंदीवर माँ दुर्गा उठाकर ले गई है और रिक्त स्थान को देखकर राम आत्माधिकार की अवस्था में पहुच गये हैं। ये कहते हैं कि -'धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध,धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध। जानकी हाय!उद्वार प्रिया का हो न सका। यह आत्मधिकार किसलिए है यह न तो विजय के लिए है न साधना की सफलता के लिए बल्कि सिर्फ सीता की मुक्ति के लिए है। घोर विफलता और आत्मधिकार की अवस्था में व्यक्ति सबसे पहले उसी लक्ष्य की बात करता है जो सबसे महत्वपूर्ण होते भी नहीं हो पाता। आत्माधिकार के तुरंत बाद जानकी हाय!उद्वार प्रिया का हो न सका कथन का राम के मुख से निकलना इस बात का प्रताण है कि सीता की मुक्ति ही कविता का केन्द्रीय उद्देश्य है साथ ही सीता की मुक्ति के रूप में आधुनिक नारी को सामाजिक रूढ़ियों से मुक्त करने का प्रयास ही इस कविता को वर्तमान समय की प्रासंगिकता से भी जोड़ता है

सन्दर्भ-सूचीः-

1. **मानक विशाल हिन्दी शब्दकोष**, **संकलनकर्ता**, **कृष्णकान्त दीक्षित**, **सूर्यनारायण उपाध्याय**, **पृष्ठ** 1018 **कमल प्रकाशन नई दिल्ली**-110002

2. **उपरोक्त वही**, **पृष्ठ संख्या**-755

3. **बच्चन सिंह**, **आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द पृ**0 87, **वाणी प्रकाशन**, 4695, 21-**ए दरियागंज**, **नयी दिल्ली**-110002

4. **संपादक**-**रामविलास शर्मा**,**रागविराग** '**सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला**',**लोकभारती प्रकाशन**,**पहली मंजिल**,**दरबारी बिल्डिंग**,**महात्मा** ***गांधी*** **मार्ग**,**इलाहबाद**-1,**पृष्ठ संख्या**-92

5. **उपरोक्त**,**पृष्ठ संख्या**-94

6. **उपरोक्त**,**पृष्ठ संख्या**-94

7. **उपरोक्त**,**पृष्ठ संख्या**-98

8. **उपरोक्त**,**पृष्ठ संख्या**-95

9. **उपरोक्त**,**पृष्ठ संख्या**-103

10. **उपरोक्त**,**पृष्ठ संख्या**-103

11. **उपरोक्त**,**पृष्ठ संख्या**-99